

विकसित भारत / २०४७ : महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा की प्रासंगिकता

1. डॉ. भावना

सहायक आचार्य (इतिहास)
राजकीय नेहरू मेमोरियल महाविद्यालय,
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

2. डॉ. सिद्धार्थ राव

सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)
राजकीय नेहरू मेमोरियल महाविद्यालय,
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

सारांश

भारत वर्ष २०४७ में अपनी स्वतंत्रता के १०० वर्ष पूरे करेगा और सरकार ने उस समय तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केवल आर्थिक प्रगति ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक समरसता, और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों को भी समान महत्व देना आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा एक मार्गदर्शक के रूप में उभरती है।

महात्मा गांधी ने स्वदेशी को केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के रूप में नहीं देखा बल्कि यह एक समग्र जीवनदर्शन था जो स्थानीय उत्पादन, आत्मनिर्भरता, पर्यावरणीय संतुलन, और नैतिक उपभोग को केंद्र में रखता है। उनका मानना था कि यदि भारत को सच्ची स्वतंत्रता और स्थायी विकास की ओर बढ़ना है तो उसे अपने ही संसाधनों, कारीगरों, ग्रामीण समाज, और सांस्कृतिक जड़ों पर विश्वास करना होगा।

वर्तमान में 'मेक इन इंडिया', 'वोकल फॉर लोकल', और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी योजनाएँ गांधीजी के स्वदेशी विचार की आधुनिक पुनर्व्याख्या हैं। इन पहलों के माध्यम से भारत स्थानीय उद्योगों, स्टार्टअप्स, डेड्स, कृषि क्षेत्र और पारंपरिक शिल्पों को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है, जो भविष्य में सतत विकास की कुंजी बन सकते हैं।

यह शोधपत्र गांधीजी की स्वदेशी अवधारणा के ऐतिहासिक संदर्भ, वर्तमान भारत में उसकी प्रासंगिकता और विकसित भारत / २०४७ के लक्ष्य में उसकी संभावित भूमिका का गहन विश्लेषण करता है। इसमें यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि यदि भारत को एक समावेशी, नैतिक और टिकाऊ विकसित राष्ट्र बनाना है तो गांधीवादी स्वदेशी दर्शन को न केवल याद करना होगा बल्कि उसे आधुनिक संदर्भों में अपनाकर जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

मूल शब्द: स्वदेशी, महात्मा गांधी, आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत / २०४७, भारतीय अर्थव्यवस्था, वोकल फॉर लोकल, सामाजिक समरसता, गांधीवादी अर्थशास्त्र

महात्मा गांधी का मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है, और जब तक गांव आत्मनिर्भर नहीं होंगे तब तक भारत सच्चे अर्थो

में स्वतंत्र या समृद्ध नहीं हो सकता। उनके अनुसार, स्वदेशी का अर्थ केवल स्वदेश में निर्मित वस्तुओं का उपयोग करना नहीं है बल्कि यह एक समग्र विचार है— जिसमें स्वावलंबन, नैतिकता, स्थानीयता और मानवतावादी दृष्टिकोण

निहित है। यह दर्शन व्यक्ति के जीवन से लेकर राष्ट्र की अर्थव्यवस्था तक एक स्थायी और संतुलित व्यवस्था की मांग करता है।

आज जबकि भारत तेजी से डिजिटलीकरण, शहरीकरण और वैश्वीकरण की ओर अग्रसर है तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने जड़ों की ओर लौटें और यह सुनिश्चित करें कि विकास का मार्ग लोकहितकारी और समावेशी हो। गरीबों, किसानों, कारीगरों और ग्रामीण समुदायों को विकास की मुख्यधारा में शामिल किए बिना "विकसित भारत" की संकल्पना अधूरी है।

महात्मा गांधी का स्वदेशी दर्शन आधुनिक भारत के लिए एक एथिकल मॉडल ऑफ डेवलपमेंट प्रस्तुत करता है जिसमें आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय स्थिरता और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की भी चिंता व्यक्त की गई है। जब हम विकसित भारत की परिकल्पना करते हैं, तब यह प्रश्न उठता है कि क्या केवल विदेशी निवेश, तकनीकी नवाचार, और शहरी ढाँचों का विस्तार ही पर्याप्त है या फिर हमें गांधीजी के दृष्टिकोण से यह भी सोचना होगा कि विकास कैसा हो, किसके लिए हो, और किस दिशा में हो?

इस शोधपत्र का उद्देश्य है कि गांधीजी की स्वदेशी अवधारणा को २१वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में पुनः व्याख्यायित किया जाए और यह जांचा जाए कि क्या यह विचारधारा आज के भारत के लिए विकास का व्यवहारिक और नैतिक मार्ग हो सकती है। यह शोध विचार, नीति और व्यवहार—तीनों स्तरों पर स्वदेशी की पुनःस्थापना की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

स्वदेशी की गांधीवादी अवधारणा

महात्मा गांधी के समग्र चिंतन में स्वदेशी केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक जीवनदर्शन था। स्वदेशी का शाब्दिक अर्थ है—

स्व का देश या अपना देश है परंतु गांधीजी ने इसे एक ऐसे मूल्य के रूप में परिभाषित किया जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को आत्मनिर्भर, नैतिक और संयमित जीवन की ओर प्रेरित करता है।

गांधीजी ने लिखा, "स्वदेशी का अर्थ है अपने पड़ोस में बनी चीजों को प्राथमिकता देना। इसका उद्देश्य यह है कि व्यक्ति और समाज अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने ही संसाधनों और कौशल के माध्यम से करें।"

गांधीजी की स्वदेशी अवधारणा के तीन प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित हैं—

१. आर्थिक आत्मनिर्भरता

महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा का केन्द्रीय तत्व आर्थिक आत्मनिर्भरता था। उनके अनुसार, कोई भी राष्ट्र तब तक सच्चे अर्थों में स्वतंत्र नहीं हो सकता जब तक वह आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर न हो। भारत के संदर्भ में गांधीजी ने यह स्पष्ट किया कि देश को न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आवश्यकता है बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता भी उतनी ही अनिवार्य है, जो विदेशी निर्भरता, शोषण और गरीबी को समाप्त कर सके।

ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था का मॉडल—

गांधीजी का मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। अतः उन्होंने एक ग्राम—आधारित, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था का समर्थन किया। वे चाहते थे कि हर गांव एक आत्मनिर्भर इकाई बने, जहाँ—

- स्थानीय स्तर पर उत्पादन हो,
- आवश्यक वस्तुएं गांव में ही बनें और बिकें,
- बाहरी संसाधनों पर न्यूनतम निर्भरता हो,
- हर व्यक्ति को आजीविका के अवसर मिलें।

इस प्रकार का मॉडल न केवल रोजगार सृजन करता है, बल्कि आर्थिक असमानता को भी कम करता है।

खादी और कुटीर उद्योग

स्वदेशी की आर्थिक आत्मनिर्भरता का सबसे सशक्त प्रतीक 'खादी' था। गांधीजी ने इसे केवल वस्त्र नहीं बल्कि स्वतंत्रता का वस्त्र कहा। उन्होंने खादी के माध्यम से यह सिद्ध किया कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसान हो, विद्यार्थी हो या गृहिणी— अपने श्रम से न केवल आत्मनिर्भर बन सकता है, बल्कि राष्ट्रनिर्माण में भी भागीदार हो सकता है।

- खादी और कुटीर उद्योगों ने बड़े पैमाने पर ग्राम्य रोजगार प्रदान किया।
- इनसे महिलाओं और बुजुर्गों को भी उत्पादन की मुख्यधारा में लाया गया।
- गांधीजी की दृष्टि में खादी आत्मबल, स्वाभिमान और स्वराज का प्रतीक थी।

विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

गांधीजी ने ब्रिटिश वस्त्रों और माल का बहिष्कार कर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि विदेशी वस्तुओं की अधिकता देश की स्थानीय अर्थव्यवस्था, कारीगरों और पारंपरिक उद्योगों को नष्ट कर रही है।

महात्मा गांधी के कथनानुसार, "हर विदेशी वस्तु जो हम खरीदते हैं, वह किसी भारतीय का पेट काटती है।"

स्वदेशी अपनाकर गांधीजी ने आर्थिक निर्भरता को तोड़ने का सफल प्रयास किया जो आज भी 'लोकल फॉर वोकल' जैसे अभियानों में परिलक्षित होता है।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

आज भारत में "आत्मनिर्भर भारत", "मेक इन इंडिया", और "स्टार्टअप इंडिया" जैसी

योजनाएँ गांधीजी की इसी सोच का आधुनिक संस्करण हैं। इनका उद्देश्य है—

- घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना
- MSMEs (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों) को सशक्त बनाना
- स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुँचाना
- रोजगार निर्माण और आय का विकेंद्रीकरण सुनिश्चित करना

कोविड-१९ महामारी के बाद भारत ने यह महसूस किया कि जब वैश्विक आपूर्ति शृंखलाएँ बाधित हो जाती हैं तब देश को आत्मनिर्भरता ही बचा सकती है।

आत्मनिर्भरता और नैतिकता का संबंध

गांधीजी ने आत्मनिर्भरता को केवल आर्थिक नहीं बल्कि नैतिक सिद्धांत भी माना। उनका कहना था कि जब व्यक्ति और समाज स्वयं के श्रम और संसाधनों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तो उसमें सम्मान, श्रमशीलता और संतुलन का भाव उत्पन्न होता है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता, गांधीजी की दृष्टि में केवल उत्पादन और उपभोग की प्रक्रिया नहीं थी बल्कि एक ऐसा मार्ग था जो व्यक्ति के स्वाभिमान, समाज की समरसता, और राष्ट्र की स्वतंत्रता का आधार बन सकता था। आज, जब भारत २०४७ के विकसित राष्ट्र के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, यह आवश्यक है कि गांधीजी की इस अवधारणा को आधुनिक तकनीकी, उद्यमिता और नीति निर्माण से जोड़कर पुनःस्थापित किया जाए।

२. नैतिक उपभोग

नैतिक उपभोग महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा का एक गूढ़ और अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। गांधीजी ने उपभोग को केवल एक आर्थिक प्रक्रिया नहीं माना बल्कि उन्होंने इसे एक नैतिक कर्तव्य के रूप में देखा। उनका मानना था

कि कोई भी उपभोक्ता वस्तु केवल सुविधा या आकर्षण के आधार पर नहीं बल्कि उसके सामाजिक, आर्थिक और नैतिक प्रभावों को ध्यान में रखते हुए चुनी जानी चाहिए।

उपभोग का नैतिक दायित्व

गांधीजी ने कहा था, "इस पृथ्वी में सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है पर किसी एक के लोभ की नहीं।" इस कथन में उपभोग के पीछे छिपी नैतिक चेतना की झलक मिलती है। वे मानते थे कि जब हम किसी वस्तु का उपभोग करते हैं तो हम सिर्फ एक भौतिक वस्तु नहीं चुनते बल्कि हम एक आर्थिक संरचना, एक श्रम परंपरा, और एक सामाजिक परिणाम को भी चुनते हैं।

स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना — नैतिक जिम्मेदारी

गांधीजी के अनुसार, जब कोई व्यक्ति विदेशी उत्पाद को प्राथमिकता देता है, तो वह—

- स्थानीय कारीगरों की आजीविका छीनता है
- अपने समाज के भीतर बेरोजगारी को बढ़ाता है,
- स्वदेशी उद्योगों को नष्ट करता है।

इसलिए उन्होंने कहा कि स्वदेशी उत्पादों का चयन केवल देशप्रेम नहीं बल्कि एक नैतिक चुनाव है। यह उपभोगकर्ता की संवेदनशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी को दर्शाता है।

संयम और आवश्यकता का संतुलन

गांधीजी ने उपभोग को "आवश्यकता" तक सीमित रखने की बात की। उनका मानना था कि भोग की प्रवृत्ति समाज में असंतुलन और शोषण को जन्म देती है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि—

- आवश्यकता आधारित उपभोग समाज में संतुलन और संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करता है।

- अनावश्यक उपभोग संसाधनों का दुरुपयोग है और यह वंचित वर्गों के अधिकारों का हनन भी है।

इसलिए गांधीजी का उपभोग का सिद्धांत हमें "कम में संतोष" और "साझेपन की भावना" सिखाता है।

आधुनिक उपभोक्तावाद और गांधीजी की चेतावनी
आज का वैश्विक बाजार उपभोक्ता को लुभावनी वस्तुओं की भरमार देकर लगातार अधिक खर्च और संग्रह की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। गांधीजी ने इस प्रवृत्ति को बहुत पहले ही पहचान लिया था। उन्होंने चेतावनी दी थी कि— जब उपभोग तर्क और नैतिक विवेक से नहीं बल्कि लोभ और फैशन से संचालित होगा तो समाज असमानता, पर्यावरणीय संकट, और संस्कृति के क्षरण की ओर बढ़ेगा।

नैतिक उपभोग और पर्यावरण

आज के संदर्भ में गांधीजी की उपभोग संबंधी सोच पर्यावरणीय संरक्षण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। नैतिक उपभोग का तात्पर्य है—

- स्थानीय और टिकाऊ संसाधनों का उपयोग,
- प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण दोहन,
- पुनः उपयोग और पुनःचक्रण की संस्कृति को अपनाना।

गांधीजी का जीवन स्वयं सरलता और पर्यावरणीय चेतना का प्रतीक था जहाँ कम संसाधनों में भी गरिमापूर्ण और संतुलित जीवन जिया जा सकता है।

महात्मा गांधी का नैतिक उपभोग का सिद्धांत केवल व्यक्तिगत आचरण का मार्ग नहीं बल्कि एक सामूहिक सामाजिक दर्शन है। यह हमें उपभोग के माध्यम से समाज, कारीगर, पर्यावरण और राष्ट्र के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देता है। विकसित भारत 2047 की परिकल्पना को साकार करने के लिए आवश्यक है कि हम उपभोक्ताओं को केवल

ग्राहक नहीं बल्कि जिम्मेदार नागरिक के रूप में देखें— जैसा गांधीजी ने हमें सिखाया।

३. सामाजिक न्याय और सामुदायिक भावना

महात्मा गांधी के स्वदेशी सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक न्याय और सामुदायिक भावना का विकास था। उनके अनुसार, जब हम स्थानीय उत्पादों और सेवाओं को प्राथमिकता देते हैं तो हम न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते हैं, बल्कि अपने समाज के सबसे कमजोर वर्गों— जैसे कारीगरों, किसानों, और श्रमिकों को सम्मान और आजीविका भी प्रदान करते हैं।

स्वदेशी के माध्यम से गांधीजी ने सामाजिक समानता का मार्ग प्रशस्त किया, जहाँ हर व्यक्ति की श्रम की गरिमा और योग्यता को मान्यता मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि जब उपभोग स्थानीय होगा, तब धन और संसाधनों का वितरण अधिक न्यायपूर्ण होगा और समुदाय के भीतर सहयोग, सहानुभूति और साझेदारी की भावना बढ़ेगी।

इस प्रकार, स्वदेशी केवल आर्थिक आंदोलन नहीं था बल्कि एक सामाजिक समरसता और न्याय आधारित समाज के निर्माण की दिशा में एक सशक्त नैतिक प्रयास था।

स्वदेशी बनाम आयातित संस्कृति

महात्मा गांधी के अनुसार, स्वदेशी केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता नहीं बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता का भी प्रतीक है। उन्होंने यह चेताया कि विदेशी वस्तुओं के अंधानुकरण के साथ-साथ विदेशी जीवनशैली, भाषा और मूल्यों को अपनाना हमारी अपनी सांस्कृतिक जड़ों और आत्मविश्वास को कमजोर करता है।

स्वदेशी संस्कृति में सरलता, सह-अस्तित्व, पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय भाषाओं व कला-रूपों का सम्मान निहित है जबकि आयातित

संस्कृति प्रायः उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा और भौतिकवाद को बढ़ावा देती है।

गांधीजी का आग्रह था कि आधुनिकता को अपनाते समय अपनी सांस्कृतिक पहचान और मूल्यबोध को न खोया जाए। स्वदेशी दृष्टिकोण से भारत अपनी परंपराओं को जीवित रखते हुए भी विकास की ओर अग्रसर हो सकता है— जो आत्मबल और आत्मगौरव दोनों को पुष्ट करता है।

नवीनता नहीं, पुनर्स्थापना की आवश्यकता

गांधीजी की स्वदेशी अवधारणा आज के संदर्भ में भी उतनी ही मौलिक और व्यवहारिक है। आज भारत यदि डिजिटल और वैश्विक प्रगति कर रहा है तो उसे अपनी जड़ों को भूलने की नहीं बल्कि उन्हें आधुनिक तकनीक से सशक्त करने की आवश्यकता है। गांधीजी के शब्दों में, “मुझे पश्चिम से जो कुछ सीखना है, वह मेरी स्वदेशी भावना के विरुद्ध नहीं है, जब तक कि वह मेरे अपने जीवन, अपने समाज, और अपने देश के अनुकूल हो।”

आज जब भारत २०४७ के लिए विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, तो उसे ऐसी नीतियों और जीवनशैली की ओर लौटना होगा जो स्थायित्व, आत्मनिर्भरता और नैतिकता पर आधारित हों। गांधीजी की स्वदेशी सोच को आधुनिक तकनीक, नवाचार और उद्यमशीलता से जोड़कर हम एक भारतीय संदर्भ में उपयुक्त विकास मॉडल तैयार कर सकते हैं।

महात्मा गांधी का स्वदेशी दर्शन आज केवल ‘पुरातन विचार’ नहीं बल्कि समकालीन भारत की चुनौतियों का उत्तर है— जो आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, सांस्कृतिक क्षरण और पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है। यह विचार हमें ‘विकास’ को पुनर्परिभाषित करने का अवसर देता

है— एक ऐसा विकास जो स्थानीय हो, टिकाऊ हो, और न्यायसंगत हो।

विकसित भारत / २०४७ और स्वदेशी की भूमिका

भारत सरकार ने वर्ष २०४७ तक भारत को एक विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केवल ळक् वृद्धि, तकनीकी विकास और आधारभूत ढांचे के निर्माण पर बल देना पर्याप्त नहीं है; इसके लिए आवश्यक है कि विकास की प्रक्रिया लोकल से ग्लोबल की ओर, समावेशिता और संस्कृति आधारित टिकाऊ अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित हो। इसी संदर्भ में महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा एक व्यवहारिक और नैतिक मार्गदर्शिका के रूप में सामने आती है।

आत्मनिर्भर भारत की बुनियाद—

“आत्मनिर्भर भारत” अभियान आधुनिक भारत में महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा की पुनर्परिभाषा है। इसका उद्देश्य है कि भारत अपने संसाधनों, कौशल और उद्यमिता के बल पर न केवल घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति करे बल्कि वैश्विक बाज़ार में भी सशक्त उपस्थिति बनाए। इस अभियान के अंतर्गत—

- स्थानीय उद्योगों (हैड्स) को प्रोत्साहन,
- घरेलू उत्पादन में वृद्धि,
- नवाचार और स्टार्टअप संस्कृति का विकास,
- और “वोकल फॉर लोकल” जैसे विचारों को लोकप्रिय बनाया गया है।

गांधीजी की तरह, यह पहल भी इस विश्वास पर आधारित है कि वास्तविक स्वतंत्रता तभी संभव है जब देश आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्थानीयकरण

महात्मा गांधी का मानना था कि भारत की आत्मा उसके गांवों में बसती है और जब तक

गांव आत्मनिर्भर नहीं होंगे तब तक भारत का समग्र विकास संभव नहीं है। स्वदेशी अवधारणा इसी विचार पर आधारित है जहाँ प्रत्येक गांव को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से स्वावलंबी इकाई के रूप में विकसित करने की बात की गई है।

स्थानीयकरण का अर्थ है— स्थानीय संसाधनों, श्रम और कौशल का उपयोग कर स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति। यह दृष्टिकोण:

- हस्तशिल्प, खादी, कुटीर उद्योग जैसे पारंपरिक क्षेत्रों को पुनर्जीवित करता है,
- रोज़गार के अवसर बढ़ाता है,
- शहरों पर निर्भरता को कम करता है,
- और स्थायी, समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

आज “ग्रामीण उद्यमिता”, “डिजिटल गांव”, और “स्थानीय स्टार्टअप” जैसी पहलकदमियाँ इसी स्वदेशी सोच के आधुनिक स्वरूप हैं।

सतत विकास और पर्यावरणीय संतुलन

महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा में प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और पर्यावरणीय संतुलन की गहरी चेतना निहित थी। उनका यह प्रसिद्ध कथन— “पृथ्वी सबकी ज़रूरतें पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक के लालच को नहीं” इस विचारधारा का मूल है।

गांधीजी का आग्रह था कि स्थानीय और सरल जीवनशैली अपनाकर मनुष्य प्रकृति के साथ संतुलन में जी सकता है। स्वदेशी दृष्टिकोण में:

- स्थानीय संसाधनों का संरक्षण,
- परंपरागत टिकाऊ उत्पादन विधियाँ,
- और साधनों का न्यूनतम उपयोग शामिल था।

आज जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण जैसी समस्याओं के समाधान के लिए गांधीजी का स्वदेशी व प्रकृति-केन्द्रित सोच अत्यंत प्रासंगिक है।

संस्कृति और शिक्षा में स्वदेशी दृष्टिकोण

महात्मा गांधी ने शिक्षा और संस्कृति दोनों में स्वदेशी दृष्टिकोण को अत्यधिक महत्व दिया। उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो भारतीय समाज, भाषा, कारीगरी और नैतिक मूल्यों से जुड़ी हो। उन्होंने नैतिक शिक्षा, श्रम आधारित शिक्षण और मातृभाषा में अध्ययन को स्वदेशी शिक्षा का मूल स्तंभ माना।

इसी प्रकार, संस्कृति के क्षेत्र में स्वदेशी दृष्टिकोण का अर्थ है कि स्थानीय कला, संगीत, परंपराएँ, वेशभूषा और आचार-विचार को महत्व देना न कि अंधानुकरण करना।

आज नई शिक्षा नीति (२०२०) गांधीजी के विचारों की पुनर्पुष्टि करती है, जहाँ भारतीय भाषाओं, मूल्यों और कौशल को प्राथमिकता दी जा रही है। नई शिक्षा नीति (२०२०) में भारतीय भाषाओं, स्थानीय ज्ञान परंपराओं, और कौशल विकास पर बल दिया गया है जो गांधीजी के स्वदेशी दृष्टिकोण की ही आधुनिक अभिव्यक्ति है। एक विकसित भारत तभी संभव है जब उसकी शिक्षा प्रणाली भारतीय संदर्भ में मौलिक सोच और मूल्यपरक दृष्टि प्रदान करे।

वैश्विक मंच पर स्वदेशी की पहचान

महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा आज केवल भारत तक सीमित नहीं रही बल्कि वैश्विक मंच पर भारतीयता की पहचान और सम्मान का आधार बन गई है। योग, आयुर्वेद, खादी, हस्तशिल्प, भारतीय खानपान और जीवनशैली जैसे क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वदेशी सोच की सफलता का प्रतीक बन चुके हैं। भारत अब "लोकल टू ग्लोबल" के मंत्र के साथ अपने पारंपरिक उत्पादों और सांस्कृतिक मूल्यों को वैश्विक बाजार और मंचों तक पहुँचा रहा है। यह केवल आर्थिक सफलता नहीं बल्कि सांस्कृतिक

आत्मविश्वास और सॉफ्ट पावर का विस्तार भी है। इस प्रकार स्वदेशी अब एक सीमित अवधारणा नहीं बल्कि भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा का वाहक बन चुका है।

निष्कर्ष

स्वदेशी महात्मा गांधी की एक ऐसी बहुआयामी अवधारणा है जिसे केवल आर्थिक नीति या स्वतंत्रता संग्राम की रणनीति के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि यह एक समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण से जुड़े समग्र दर्शन का प्रतिनिधित्व करती है। गांधीजी का स्वदेशी दृष्टिकोण व्यक्ति की आत्मनिर्भरता, समाज की सहअस्तित्व भावना और राष्ट्र की सांस्कृतिक आत्मा को एक सूत्र में पिरोता है।

वर्ष २०४७ तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में सिर्फ तकनीकी प्रगति, शहरीकरण या निवेश ही पर्याप्त नहीं हैं। यह लक्ष्य तभी सार्थक होगा जब विकास की प्रक्रिया लोककेंद्रित, मूल्यनिष्ठ और टिकाऊ हो। इसके लिए आवश्यक है कि हम गांधीजी के स्वदेशी दर्शन को आधुनिक संदर्भों में पुनःस्थापित करें न केवल स्मरण करें।

स्वदेशी की अवधारणा आज भी हमें यह सिखाती है कि:

- स्थानीय संसाधनों पर आधारित विकास समाज को आत्मनिर्भर बनाता है,
- नैतिक उपभोग से संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण होता है,
- परंपरागत ज्ञान और कारीगरी के प्रोत्साहन से संस्कृति सशक्त होती है,
- और सामाजिक न्याय व पर्यावरणीय संतुलन को व्यवहार में लाया जा सकता है।

वर्तमान में चल रहे अभियान जैसे आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, वोकल फॉर

लोकल— गांधीवादी सोच के आधुनिक संस्करण हैं। किंतु जब तक इन अभियानों को केवल नीतिगत नहीं बल्कि आचरणात्मक और नैतिक आंदोलन के रूप में नहीं अपनाया जाएगा तब तक वे सीमित रह सकते हैं।

गांधीजी का स्वदेशी दर्शन एक चेतावनी भी है और एक दिशा भी— चेतावनी इसलिए कि अगर हम अपनी संस्कृति, संसाधनों और समाज से कट गए, तो विकास खोखला होगा और दिशा इसलिए कि यदि हम अपने लोक में भरोसा रखें, तो भारत न केवल विकसित राष्ट्र बनेगा। बल्कि विश्व को भी मानवीय विकास का मार्ग दिखा सकेगा।

इसलिए विकसित भारत 2047 की संकल्पना को सफलतापूर्वक मूर्त रूप देने के लिए गांधीजी के स्वदेशी विचार की पुनर्परिभाषा नहीं, पुनर्प्रयोग की आवश्यकता है— नीति में भी और जीवन में भी।

संदर्भ

१. गांधी, मोहनदास करमचंद, हिन्द स्वराज या इंडियन होम रूल. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, १९३८।
२. कुमार, राजीव, गांधीवादी अर्थशास्त्र और ग्रामीण विकास. रावत पब्लिकेशन, २००४।
३. चक्रवर्ती, बिद्युत, महात्मा गांधी का सामाजिक और राजनीतिक चिंतन. रूटलेज इंडिया, २००६।
४. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, नई शिक्षा नीति २०२०. भारत सरकार, २०२०।
https://www.education-gov-in/sites/default/files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
५. नीति आयोग, न्यू इंडिया 100 के लिए रणनीति. भारत सरकार, २०१८।

https://www.niti-gov-in/sites/default/files/2019/01/Strategy_for_New_India.pdf

६. मिश्र, एस. एन. आधुनिक भारत में गांधीवादी चिंतन की प्रासंगिकता. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, २०१२।
७. शर्मा, अरविंद, गांधी : एक आध्यात्मिक जीवनी. येल यूनिवर्सिटी प्रेस, २०१३।
८. भारत सरकार, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय। आत्मनिर्भर भारत अभियान. भारत सरकार, २०२०।
<https://www.pmindia-gov-in/en/news&updates/aatmanirbhar&bharat&abhiyan>
९. मेहता, उदय, गांधी और लोकमंगलरू वैश्वीकरण के युग में नैतिक चिंतन. रूपा पब्लिकेशन, २०१०।